JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्री अनुपम मिश्रा

रचनात्मक कार्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पुरुस्कार प्रप्तकर्ता - २०११

आज हम पुण्यश्लोक जमनालालजी की स्मृति में यहाँ एकत्र हुए है। उन्हें प्रणाम। उन्ही के साथ आदरणीय जानकीदेवी जी को भी नमन।

आज हम सब पुण्यश्लोक जमनालाल जी की स्मृति में यहां एकत्र हुए है। उन्हें प्रणाम। उन्हीं के साथ आदरणीयः जानकीदेवी जी को भी नमन।

आज की नई पीढ़ी तो बाद की बाद है, हमारी पीढ़ी भी उस युग की ऐसी विभूतियों के बारे में कुछ ज़्यादा जानते नाही है। यह बात शायद बहुत ही कम लोगो को पत्ता होगी कि आदरणीयः जानकीदेवी जी ने अपने जीवन के एक पड़ाव पर यह संकलप ले लिया था कि वे अपनी वाणी से 'ना' या 'नाही' जैसे नकारात्मक शब्दों का प्रयोग नाही करेंगी। रोजमर्रा के जीवन में नकारात्मक विचार तो आगे की बात है, आपसी बातचीत तक में नकारात्मक शब्दो तक का उपयोग नाही करना - एक बहुत ही कठिन काम है। और इस कठिन साधना को अच्छी तरह से निभाकर गई है आदरणीयः जानकीदेवी जी।

आज तो देश में सब तरफ नकारात्मक विचार, शब्द फैले पड़े है। अविशवास, घृणा, दुसरे को सहना नही, अपनों तक को नही सहना - इनकी बाढ़ - सी आ गई है। दूसरी तरफ भयानक अकाल है , अच्छे बातो का, सकारात्मक कामो का।

यह हमारा सौभाग्य रहा की हमें इन विभूतियों से जुड़े एक बड़े व्यापक सांसर से थोड़ा बहुत जुड़ सकने का मौका लगा। हमारे यहां एक कहावत है की बेस्वाद फीका धागा भी मिस्री से जुड़ जाएं तो कुछ मीठा हो जाता है। कहावत यही नही रुक जाती। आगे चलकर दूसरी पंखित में वह कहती है कि मिस्री से जुड़कर इस मामूली से धागों का दाम भी मिस्री जितना कीमती हो जाता है। वह भी उसी दाम तुलता है।

तोः हम जैसे मामूली, फीके, बेस्वाद और कच्चे धागे भी अच्छे विचारों से जुड़कर, मिस्री जैसे लोगो के संपर्क में आकर आज आप सबको दर्शन कर पाए है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक आज पूरे देश में पानी का संकट बना रहता है। सिर्फ गर्मी के मौसम में ही नही, अब तो सर्दी के दिनों में भी जल संकट आ जाता है। गांव, शहर, राजधानी - यह संकट सब जगह छा जाता है। सारे जहां से अच्छे जिस हिन्दुस्तान का बखान करते हुए कवी इक़बाल ने कहा कि गोदी में खेलती है जिसकी हज़ारों नदियां - वो सारी नदियां इस बीच एकदम गंदी हो गई है, प्रदूषित हो गई है या फिर सुखाकर मार दी गई। भूजल का हाल तो पूछीए ही नही। वह तो इस दौर में हामरी राजनीती गिर चला है।

ऐसी कठिन परिस्थिति में हमने इस सरल - तरल पानी का छोर पकड़ कर पिछले ३० बरसो में कुछ छोटे - छोटे काम किये है। हमने कोहे नाया काम नहीं किया। नाया शोध नहीं किया। शोध के बदले श्रद्धा से देखा अपने समाज को, जिसने अंग्रेज़ों के आने से पहले हर गांव में छोटे-बड़े- दो-चार तालाब बनाएं थे, बिना किसी इंजीनियर के। पानी कम गिरता हो या ज़्यादा - सबकी जरूरत देखकर पानी को उतनी मात्रा में रोकने का पुख्ता इंतज़ाम किया था। उस समाज ने बाज़ार देख कर बदलने वाली पंचवर्षीय जलनीति, जल योजना नही बनाये थी, उसने तो अपने क्षेत्र का मौसम, भूगोल देख - समझ बरस चल सके - ऐसा विराट जल दर्शन बनाया था।

अपने समाज को शोद के बदले श्रद्धा से देखने पर हमें पानी के संदर्भ में सचमुच एक अनोखा, अमोलिक रामरतन मिल गया। इसे कितना भी वापरो - वह खुटता नहीं, बल्कि यह काम तो दिन - दिन सवया बढ़ाता चला जा रहा है।

कई बरसो तक हमारे गावो ने, शहरों ने इस अनोखे रामरतन को बड़े जतन से संभाल कर रखा था। पर गुलामी ने लंबे दौर में और फिर आज़ादी के इस विचित्र दौर में हमारे समाज से यह पानी की उत्तम तकनीक, उत्तम रामरतन गुम गया था । हमने

उसे थोड़ा - सा पाया और जहां से मिला उसी समाज को प्यार से इसे फिर से बताने का काम है। देखते - देखते आज ३० बरसो से न जाने कितनी जगहो पर इस सुंदर सरल तकनीक से समाज ने बिना किसी का मुंह ताके, बहुत थोड़े से साधनों को जुटाकर, अपनी साधना से पानी के अपनी समस्या को खुद हल करके दिखाया है।

जन-गण के मन में जो तकनीक बरसो तक रची - बसे रही, उसकी थोड़ी - सी धूल हमने साफ़ की है, उसे थोड़ा - सा चमका दिया है और लो आज वह फिर से काम आने लगी है।

हमारे इन छोटे - छोटे काम का कुल जोड़ भी छोटा - सा ही रहा है। पर आप साबकी उदारता ने इन छोटे - छोटे कामों को जोड़ने के बदले अपने स्नेह से गुणा करके इसे कई गुना बढ़ा दिया है। मै इस उदारता के लिए जमनालाल बजाज प्रतिष्ठान के प्रति अपनी कृतजता जापित करता हूँ और प्रभु से इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि वह हमे इस प्रतिष्टित सम्मान के योग्य बनाए।

सबको प्रणाम